मार्ग में देह को त्याग कर गये हुए ब्रह्मवेत्ता पुरुष ब्रह्म को प्राप्त हो जाते हैं।।२४।।

तात्पर्य

अग्नि, प्रकाश, दिन, सूर्य आदि के उल्लेख से ज्ञान पड़ता है कि इन सभी के अपने-अपने अभिमानी देवता हैं, जो आत्मा के गमन की व्यवस्था करते हैं। देहान्तकाल में जीव एक नये जीवन की ओर अग्रसर होता है। दैवयोग से अथवा साधन के बल पर यदि इस श्लोक में बताये काल में किसी का देह-त्याग हो, तो वह निर्विशेष ब्रह्मज्योति को प्राप्त कर सकता है। उत्तम योगी इष्ट देश-काल में देह-त्याग करने की सामर्थ्य रखते हैं। दूसरों का इसमें कोई बस नहीं चलता; यदि दैववश उनका देहान्त भद्रवेला में हो जाय, तो वे भी बार-बार जन्म-मृत्यु रूप चक्र से मुक्त हो सकते हैं। अन्यथा, उनका पुनरागमन अवश्य होगा। परन्तु कृष्णभावनाभावित शुद्धभक्त के लिए पुनर्जन्म का भय कभी नहीं हो सकता, चाहे उसका देह-त्याग मंगल बेला में हो अथवा अमंगलमय समय में, दैववश हो चाहे स्वेच्छा से।

धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम्।
तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते।।२५।।

धूमः=धूमाभिमानी देवता; **रात्रिः**=रात्रि का अभिमानी देवता; **तथा**=और; **कृष्णः**=कृष्णपक्ष का अभिमानी देवता; **षट् मासाः दक्षिणायनम्**=दक्षिणायन के छः मासों का अभिमानी देवता है; **तत्र**=उस मार्ग में; **चान्द्रमसम्**=चन्द्रलोक की; **ज्योतिः**=ज्योति को; **योगी**=योगी; **प्राप्य**=प्राप्त होकर; **निवर्तते**=फिर पीछे आता है।

अनुवाद

और जिस मार्ग में धूमाभिमानी देवता है, रात्रि का अभिमानी देवता है, कृष्णपक्ष का अभिमानी देवता है और दक्षिणायन के छः मासों का अभिमानी देवता है, उस मार्ग में गया योगी चन्द्रलोक को प्राप्त होकर संसार में फिर आता है।।२५।।

तात्पर्य

श्रीमद्भागवत, तृतीय स्कन्ध में उल्लेख है कि जो मनुष्य पृथ्वी पर सकाम-कर्म एवं यज्ञ करते हैं, वे देह का अन्त होने पर चन्द्रलोक को जाते हैं। वहाँ वे देवगणना के अनुसार १०,००० वर्ष तक रहते हैं और सोमरस-पान करते हुए जीवन का उपभोग करते हैं। परन्तु अन्त में उन्हें पृथ्वी पर लौटना पड़ता है। इसका अर्थ है कि चन्द्रमा पर ऐसे उच्चकोटि के जीवों का निवास है, जो स्थूल इन्द्रियों द्वारा गोचर नहीं हैं।

शुक्लकृष्णे गती ह्येते जगतः शाश्वते मते।
एकया यात्यनावृत्तिमन्ययावर्तते पुनः।।२६।।

शुक्ल=अर्चि; **कृष्णे**=धूम; **गती**=मार्ग; **हि**=निःसन्देह; **एते**=ये दोनों; **जगतः**=जगत् के; **शाश्वते**=वेदों में; **मते**=माने गये हैं; **एकया**=एक के द्वारा; **याति**=प्राप्त होता है; **अनावृत्तिम्**=मोक्ष को; **अन्यया**=दूसरे से; **आवर्तते पुनः**=संसार में फिर जन्म लेता है।